Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR **- SJIF-6.586,** IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय बहु भाषीय एवं बहु शाखीय शोध-पत्रिका

पूना कॉलेज, पूना, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप 06 मार्च, 2020
वेबीनार विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त 2021

AUGUST 15, 2021

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप

06 मार्च, 2020

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR **- SJIF-6.586,** IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

वेबीनर विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त, 2021

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

52.साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव–*प्रा.सौ.पूर्णिमा उमेश झेंडे*.....128
53.'इक्कीसवीं सदी में नवसंचार'–डा.संतोष रायबोले 130
54. इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री–विमर्श–*प्रा.राजपूत प्रतापसिंग*.....132
55. 21 वीं सदी की कहानी में वृध्द विमर्श : अंतिम आस–जिंदगी उदास–*डॉ.राजश्री भामरे*.....134
56.हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श–*प्रा.डॉ.राजू शेख*.....137
57. इक्कीसवीं सदी के साहित्य एवं मीडिया में मूल्यापरिवर्तन–*प्रा अंबेकर वसीम फातेमा अब्दुल अजीज*.....139
58.इक्कीसवी सदी की हिन्दी कविता में स्त्री विमर्श–*डॉ.रमेश विठोबा कांबळे*.....141
59. 21वीं सदी में मीडिया का बदलता स्वरुप–*सुश्री. राणी बापू लोखंडे*.....144
60. इक्कीसवी सदी में मीडिया एवं साहित्य का बदलता स्वरूप–प्रा.रेशमा शकिल शेख 147
61.सोशल नेटवर्किंग : ऑन लाइन या ऑफ लाइफ – आदत या जरुरत–*प्रा. आसमा एम. शेख*.....149
62.ईक्कीसवीं सदी के 'कोर्ट मार्शल' में चित्रित दलित विमर्श–डॉ.भगवान पी .काम्बले, ...151
63.हिंदी साहित्य में मीडिया का बदलता स्वरूप–*प्रा.डॉ.चाटे तुकाराम वैजनाथराव*.....154
64.मीडिया का हिंदी भाषा साहित्य में महत्व शोधकर्ता–*डॉ.शेख हुसैन मैनोद्दीन*.....157
65. ईक्कीसवीं सदी में मीडिया का बदलता स्वरुप–*डॉ.शेख नूरमहंमद दाउतभाई*.....159
66.प्रिंट मीडिया में हिंदी का स्थान एवं योगदान–*डॉ. शरद शिरोळे*.....161
67.इक्कीसवीं सदी में सोशल मीडिया–*प्रा. डॉ. भरत शेणकर,* 164
68–मीडिया का बदलता स्वरुप–*डॉ. बाबासाहेब रसूल शेख*.....167
69. 21 वीं शती के मीडिया के बदलते रंग– *डॉ.श्वेता चौधारे, प्रा. प्रकाश खुळे*.....169
70.इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य का बदलता स्वरूप–*डॉ. स्मृती चौधरी*.....171
71.मीड़िया और हिंदी–*डॉ. सुनील द. चव्हाण*.....173
72. युवा वर्ग पर फिल्मों का प्रभाव–*प्रा.डॉ.सुनीता एन. कावळे*.....175
73."इक्कीसवी सदी में सोशल मीडिया के बदलते माध्यम"–*डॉ. दत्तात्रय माधवराव टिळेकर*.....177
74.नारी अबला नहीं, सबला : 'तेरी मोहब्बत में' संग्रह के संदर्भ में–*डॉ. मोहम्मद शाकिर शेख*.....180
75.आधुनिक युग में नव सोशल मीडिया का स्वरूप–*डॉ. अमानुल्ला एम. शेख*.....182
76. साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव : हिंदी समाचार पत्र–पत्रिकाओं के संदर्भ में–*डॉ. वंदना तुकाराम काटे,*.....183
77.मीडिया के बदलते मूल्यों का अध्ययन–*प्रा. डॉ. महेन्द्रकुमार रा. वाढे*.....186

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

69. 21 वीं शती के मीडिया के बदलते रंग

– डॉ.श्वेता चौधारे, प्रा. प्रकाश खुळे

मुख्य शोधार्थी डॉ.श्वेता चौधारे

कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, सोनई,
तहसिल–नेवासा, अहमदनगर।महाराष्ट्र

सहशोधार्थी प्रा. प्रकाश खुळे

बाबूराव आउसकर महाविद्यालय, केस, जि. बीड महाराष्ट्र

मीडिया अर्थात माध्यम, परंपरागत सामाजिक जुडाव के नए माध्यम के रूप में इसे देखा जा सकता है। लोकतंत्र का सबसे प्रभावी यह आधारस्तंभ इस दशक के प्रारंभ से ही सभी क्षेत्रों पर हावी रहा है। इसी कारण इस दशक को मीडिया के दशक के रूप में भी जाना जा सकता है। 2011 के प्रारंभ में ही अरब क्रांति के रूप में दुनिया के सामने क्रांति का एक नया, अनोखा ढंग शुरू हुआ। अरब क्रांति की सफलता में सोशल मीडिया का अनोखा अभूतपूर्व योगदान रहा है। ढांचागत तरीके से दूर–दराज के लोगों को इस क्रांति से जोड़ने के लिए फेसबुक, ट्विटर और अन्य प्रमुख सोशल मीडिया ने विशेष रूप से मिस्र और ट्यूनीशियाई कार्यकर्ताओं के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मध्यदेश में एशिया एवं उत्तरी अफ्रीका में संख्या बद्ध विरोध प्रदर्शन, धरना का दौर वैसे तो 2010 में ही आरंभ हो चुका था, जिसे कालांतर से अरब स्प्रिंग या अरब विद्रोह कहा गया। अरब स्प्रिंग के दौरान, लोगों ने तानाशाही, मानवाधिकार उल्लंघन, बेरोजगारी, राजनीतिक भ्रष्टाचार, बदहाल आर्थिक व्यवस्था के विरुद्ध जागरूकता बढ़ाने के लिए फेसबुक पर पेज बनाए थे। वहीं भारत में भी इसी साल अण्णा हजारे के लोकपाल आंदोलन को मीडिया के माध्यम से मिला युवाओं का समर्थन राजनीतिक गलियारों के साथ नयी सामाजिक व्यवस्था के गठण की दृष्टि से भी अनोखा साबित हुआ था। इन दोनों की घटनाओं ने जहां वैश्विक स्तर पर मूल्यस्थापना पर जोर दिया, वहीं इन्हें प्रभावी बनाने वाला मीडिया ही था।

वर्तमान में जहां मीडिया की उपादेयता कम नहीं, वहीं इसके दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। आज का सोशल मीडिया न सिर्फ हमारे सामाजिक, वैचारिक, सांस्कृतिक जीवन पर हावी हो रहा है, बल्कि इन माध्यमों ने संपूर्ण दुनिया को अपनी मुट्ठी में बांध कर रखा है। पर ध्यान से देखा जाए तो यह मुट्ठी कसी हुई वह राक्षसी मुट्ठी है जिस में फंसी चिड़िया सच या झूठ कहने पर भी अपनी जान गवा देंगी। अक्सर चौकानेवाले, भड़काने वाले, सबसे पहले बनने के चक्कर में मीडिया का जो विकृत रूप उभर कर सामने आ रहा है, उस रूप में कहीं यह समाज माध्यम समाज के लिए जागरूकता अथवा सामाजिक एकता के लिए संकल्प बद्ध दिखाई नहीं देते है। फिर चाहे वह समाचार पत्र हो, फेसबुक के पन्ने पर छपने वाली खबर हो या व्हॉटसएप पर घूमने वाला मेसेज हो।

वर्तमान मीडिया का पाठक या दर्शक जिज्ञासु कम और उपभोक्ता अधिक बन गया है, जो महज हर विषय वस्तु में मनोरंजन ही ढूंढता है। 1991 के उदारीकरण की नीतियों के फलस्वरूप भारत में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण का माँडल (एलपीजी मॉडल) चल पडा, जिसने मीडिया के रंग ढंग में परिवर्तन कर उसे अर्थबाजार से जोड़ दिया। इस नए भारत में हर सामान–सेवा को बेचने के लिए हर घर तक पहुंचने की जिम्मेदारी मीडिया पर डाली गई और ने अपना काम इतना बखुबी किया कि उसने हमारी जीवनशैली को प्रभावित करना शुरू किया। किंतु मीडिया के नाम पर जिस बलशाली स्तंभ, मानवीय मूल्यों को सहेजनेवाले माध्यम, संघर्षशील, विपदाओं से लड़ने वाली संवेदनशील तत्वों की बात उभर कर आती थी, आज वहीं मीडिया महज मदारी का बंदर बन चुका है, जो मुनाफे के लिए बेतरतीब नाचता है और संवेदनहीन हम जैसा पाठक उस मीडिया रूपी बंदर को उछलता देख तालिया पीटता है। मीडिया की निहित की गई परिभाषा, वर्तमान में मीडिया का परिवर्तित रूप, उसका कार्यक्षेत्र, मीडिया का दायित्व आदि में अंतर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। मीडिया के रूप में ऐसी चमकीली दुनिया बनाई गयी है, जहां सब कुछ बिकता है। इंसान की अनुभूतियां, अभिव्यक्तियां, उसके आंसू, उसकी हंसी और खुद इन्सान भी। किसी ने सच ही कहा है, मीडिया ने संपूर्ण दुनिया को इतना नजदीक लाकर खड़ा कर दिया है कि वह वास्तव में ग्लोबल विपेज, विश्व ग्राम बन रहा है। पर यह ऐसा ग्राम है जहां संवेदनाएं झुलसी हुई है, यथार्थ बौना

हो चुका है। चारों तरह आंखों को अंधा करने वाली चमक–धमक है, चीख–चिल्लाहट है।

मीडिया एक अंग कहलाने वाले टेलीविजन चैनलों की भीड़–भाड़ में मानवीय मूल्य दम तोड़ रहे हैं। किसी विषय घटना की सनसनी फैलाने के अजीबो–गरीब तरीके ब्रेकिंग न्यूज जैसे शब्दों के चलते आजमाए जा रहे हैं। माध्यमों ने हमारे सामने जो परोसना शुरू किया है, वह हमारी वासना, भूख को और बढा रहा है, हमें असंयमी बना रहा हैं। जल्दी से जल्दी दर्शकों तक पहुंचने के लिए बिना किसी सबूत–परख के इन खबरों को सोशल मीडिया पर चलाया जा रहा है। इन घटनाओं से दूर, अलग से वास्तविक जीवन जीने वाला जनसमुदाय भी मीडिया के पैदा किए गए संत्रास में घसीटा जा रहा है। गलत सूचनाओं से मचने वाली कई धांधलीयों को हम भुगत चुके हैं। पिछले ही साल धुलिया के राईनपाडा गांव में बच्चा चोर और मानव अंग के तस्कर होने के महज संदेह से पांच लोगों की पीट कर हत्या की गई, असम में तीन साधुओं को पीटा गया। जिसके पीछे सोशल मीडिया पर वायरल हुआ वीडिओ ही था। मीडिया पर फैलने वाले ऐसे फर्जी वीडिओ, ऑडिओं ने न जाने कितने मासूमों को अपने जान से हाथ धोना पड गया। हाल ही में नॉर्थ दिल्ली में हुए भीषण दंगों के पीछे मीडिया की भूमिका को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर तथा अन्य इंटरनेट के साथ सुविधा देने वाली वेबसाइट की गलत सूचना देने के तंत्र के कारण मनुष्य मनुष्य का ही जान का दुश्मन बन चुका है

माध्यमों ने हमें बुद्धिशून्य, भावशून्य बनाकर मशीनों में तब्दील करने की शुरुआत कर दी है। माध्यम धीरे–धीरे मनुष्यों का मशीनीकरण कर रहे हैं। यह माध्यम हमारी रोजमर्रा की आदत और मजबूरियों को विकृत रूप बनाने पर आमादा है। कई बार वे सूचनाएं जिससे हमारा कोई संबंध नहीं, हमारे सामने इस तरह से रखी जाती है कि बार–बार हमें मानसिक रूप से प्रतीति कराई जाती है कि उनके बिना हम कुछ नहीं हैं। माध्यमों के रूप में ऐसी आभासी दुनिया में हमें खड़ा किया जा रहा है कि, जहां सब कुछ हमारे लिए ही है और यदि हम उसके साथ नहीं है, तो मानो बड़ी प्रलय आ जाएंगी।

देश की आजादी के पहले गुलामी के दिनों में देखे गए सपनों की पूर्णता के लिए संविधान ने हमें कई अधिकार सुपुर्द किए। हम जिस संवैधानिक आजादी की बात करते हैं, माध्यमों का जाल अपने आप को संवैधानिक कहकर हमारी इसी आजादी को अपने भीतर कैद कर रहा है। आज हम क्या देखना चाहते हैं, क्या पाना चाहते हैं इसकी जगह मीडिया हमें क्या दिखाना चाहती है, यही हमारी दुनिया का वास्तव है। हमारी इच्छा–कामनाओं पर मीडिया पर नियंत्रण अधिक दृढ़ हो चुका है। माध्यमों में काम करने वाली रिसर्च टीम अदृश्य कदमों से हमारा पीछा करती है। हम कहां हैं, कहां जा रहे हैं, क्या खा रहे हैं, क्या पी रहे हैं, क्या पसंद कर रहे हैं, कब क्या देख रहे हैं, किसे अच्छा या बुरा मान रहे हैं, किसे अच्छा या बुरा कह रहे हैं ? हमारी हर गतिविधि पर मीडिया गिद्ध की तरह दृष्टि गड़ाए हुए हैं। जनता को अपने जाल में फंसाने के लिए माध्यमों ने नए–नए रूपों में मकड़ जाल बिछा रखा है, जिसमें हम हमारा अस्तित्व खो रहे हैं। वैश्विक क्रांति के इस युग में स्थानीय, प्रांतीय जैसे भेद पीछे पड़ रहे हैं। किंतु मीडिया के कारण हमें अपने ही घर में अदृश्य नजर कैद में रखा जा रहा है। हमारे घर में हमें कंट्रोल करने वाला किसी दूर देश में बैठा है, तो किसी दूर देश में बैठकर रिमोट की तरह ना सिर्फ बंदूकें बल्कि तरह–तरह के खेल ऍप के माध्यम से हमारे युवाओं को, उनकी जिंदगी को उंगलियों पर नचाया जा रहा है।

वर्तमान युग का मीडिया का सबसे बडा परिवर्तन यह भी स्वीकारा जा सकता है कि मीडिया ने नायकत्व की संकल्पना को बदल कर रख दिया है। जैसे पहले मीडिया समाज के द्वारा चलाई जाती थी, ठीक वैसे ही आज का समाज मीडिया के द्वारा चलाया जा रहा है। मांग के हिसाब से सुविधा को मुंहया करवाना– इस संकल्पना की तरह मीडिया के द्वारा भिन्न–भिन्न विषयों पर भिन्न–भिन्न रूपों में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। बिना किसी परीक्षण के कि उससे क्या साध्य हो रहा है ? या फिर वह समाज हित में है या सामाजिक विकृति को उभारने वाला है ? टिक–टॉक, इंस्टाग्राम जैसे मीडिया के रूप अभिव्यक्ति स्वातंत्र पर कई प्रश्न खड़े कर रहे हैं। यह माध्यम व्यक्ति के निजी जीवन में इतना ज्यादा हस्तक्षेप कर रहे हैं कि किसी विशिष्ट व्यक्ति द्वारा क्या खाया जाए ? क्या कपड़े पहने जाएं? इतना ही नहीं उसका

भविष्य का साथीदार कौन होना चाहिए इस बारे में अधिकारिक रूप से अन्यों द्वारा सुझाव दिए जाते हैं। ट्रोलिंग इन सबका घटिया और विकृत रूप है। सेलिब्रिटी के संदर्भ में हर बार उनके व्यक्तिगत जीवन को देश के मान–सम्मान के समान मानकर कई बार उनका पीछा करने वाले यह माध्यम क्या सच में अपने तत्व पर कायम है?

वर्तमान युग का मीडिया हमारी इंद्रियों पर कब्जा कर मन को काबू में करने की कोशिश कर रहा है, जो हमारे सामने खडा सबसे बड़ा खतरा है। दूसरों की तरफ देखने का दृष्टिकोण, अन्य के मतों का भावार्थ, प्रकट घटना का अर्थ क्या होना चाहिए आदि सभी माध्यम ही तय कर रहे है । मीडिया हमें मनोरंजन की आदत में डूबाने का काम कर रहा है। मूलतः मीडिया व्यक्ति के कार्यों को सुलभ करने वाली व्यवस्था है। जिस तरह से तत्वज्ञान –कानून व्यक्ति अथवा समाज हित के लिए ही होते है। किंतु इन्हीं का प्रयोग कोई स्वार्थवश करें तो यही मीडिया सबसे घातक शस्त्र सिद्ध हो सकते हैं। माध्यमों के द्वारा व्यक्ति के सामने रखी जाने वाली आभासी दुनिया इतनी प्रभावी रूप से अथवा प्रभावी प्रतीकों के माध्यम से चित्रित की जाती है कि इन काल्पनिक प्रतीकों का संबंध व्यक्ति वास्तविक जीवित दुनिया से लगा लेता है और जाने अनजाने में गुनाह के पाश में अटकता है।

माध्यम व्यक्ति स्वतंत्र के प्रेषित बन सकते हैं। जिसका बेहतर उदाहरण ऑफसाइड, जाफर पनाही द्वारा निर्देशित एक 2006 की ईरानी फिल्म है, जो उन लड़कियों के बारे में है जो विश्व कप क्वालीफाइंग मैच देखने की कोशिश करती हैं लेकिन ईरान में फुटबॉल स्टेडियमों में महिला प्रशंसकों को निषिद्ध किया जाता हैं। इस फिल्म के परिणाम स्वरूप जो जनजागृति वहां हुई जिसके चलते आज ईरानी औरतों के लिए कई अधिकारों का द्वार खुल रहे है। इस तरह कहा जा सकता है कि 21 वी शती का मीडिया अपने प्रयोग के बल पर समाज के लिए तारक या मारक सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. मीडिया हूं मैं – जयशंकर त्रिपाठी
2. मीडिया का वर्तमान परिदृश्य – राकेश प्रवीर

70.इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य का बदलता स्वरूप

–डॉ. स्मृती चौधरी

डॉ. अरविंद बी. तेलंग कॉलेज निगडी पुणे

हिन्दी साहित्य प्रावृत्तिगत परिवर्तनो के अनेको पड़ावों को पार कर आज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के सोपान पर आ पहुँचा है। इक्कीसवी सदी का दौर भूमंडलीकरण और उसे वैचारिक आधार देने वाले उत्तर आधुनिक विमर्श और मीडिया की विस्मयकारी प्रागति का दौर है। इस भाती के साहित्य में आ रहे बदलाव नित नए प्रतिमानों और विमर्शो के लिए आधार बन रहे है। भूमंडलीकरण और बाजारवाद की वर्चस्वशाली उपस्थिती नें मनुष्य जीवन सें जुडे प्राय सभी पक्षों पर अपना असर जमाया है। साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति सशक्तता के साथ हुई परिलक्षित होती है। उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावाद विखंडनावाद का नया दौर इसी सदी की उपज है। इसी सदी में आधुनिकताबोध की सारी प्रवृत्तियॉ एवं विशेषताएँ हिंदी उपन्यासों में पूर्ण रूप सें विकसित हुई दृष्टिगोचर होती है। भूमंडलीकरण और बाजारवाद के तमाम दबावों के बीच सांस्कृतिक मूल्यवत्ता को लेकर गहरे प्रश्न उभर रहे है। विषेश तौर पर मनुष्यता के मूलभूत सरोकरो को लेकर भी चिंता के स्वर उभर रहे है। इसी कारण 21 वीं सदी के साहित्य में चित्रित आधुनिकबोध का अपना विशेष महत्व है। लेकिन आधुनिक बोध है क्या इसे समझना ही हमारी पहली आवश्यकता है.....?

"आधुनिकता" यानि समय सापेक्ष जो नया है अभी का है वही आधुनिक है। यह एक ऐसी प्राक्रिया है जिसमें अनेक मूलभूत परिवर्तन निहित होते है। आधुनिकता की अवधरणा में निहित मूल्य परंपरागत बातों को नकारकर नए मूल्यों को स्वीकार करना ही आधुनिक बोध कहलाता है। हिंदी साहित्य में आधुनिकता का प्रवेश पहले से हुआ है। किंतु साठोत्तरी के बाद आधुनिकता ने साहित्य के प्रवेश ने गती ली। इक्सिवीं सदी में तो आधुनिकता की दिशा ही बदल गई।आधुनिकताकी सारी प्रवृत्तियॉ एवं विषेशताएँ 21वी सदी के साहित्य में पूर्ण रूप से विकसीत हुई परिलक्षित होती है। क्योकि आज का युग विज्ञान का युग है विज्ञान का विकास जैसे होता गया वैसे हमारा जीवन बदलता गया। वैश्वीकरण के लिए